उत्तर :- वैदिक साहित्य से उस समस्त साहित्य का बोध होता है जो चारों वेद एवं उनकी मंत्र संहिताओं से किसी न किसी प्रकार संबंधित है। इस दृष्टि से विचार करने पर वैदिक साहित्य के अन्तर्गत चारों वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद) उनकी मंत्र संहिताएँ, शाखाएं, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक ग्रंथ, उपनिषदें, वेदांग एवं सूत्र साहित्य इन सभी का भलीभांति हो जाता है।

वेद पद का अर्थ है ज्ञान। यह व्याकरण के अनुसार विद् धातु से बना है जिसका अर्थ होता है जानना। ज्ञान शब्द व्यापक अर्थ रखता है इसमें आध्यात्मिक विद्या के अतिरिक्त इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान आदि का भली समावेश हो जाता है। पर वेद पद के ज्ञान का अर्थ मुख्यतः आध्यात्मिक ज्ञान ही है। तपस्वी ऋत ऋषि, महर्षियों द्वारा ईश्वर ज्ञान ही वेद का अभिप्रेत अर्थ है।

वेद चार हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। ऋग्वेद की ऋचाएं हैं। ऋचा मंत्र का ही दूसरा नाम है। इन ऋचाओं द्वारा देवस्तुति एवं अपनी मनोकामनाओं की सिद्धि के लिए उनका साधन ही प्रमुख लक्ष्य है।

2 August Friday

ऋचाएं छन्दोबद्ध हैं। वेदों में चौदह छन्दों का प्रयोग हुआ है।

वैदिक संहिताओं में ऋग्वेद सर्वाधिक प्राचीन माना जाता है। ऋग्वेद के मन्त्र अन्य तीनों वेदों में उपलब्ध होते हैं और सामवेद तो पूरा का पूरा ऋग्वेद के मन्त्रों से बना हुआ है। अतः चारों संहिताओं से ऋग्वेद की प्राचीनता सिद्ध हो जाती है। कहा जाता है कि ऋग्वेद एक ग्रंथ न होकर विशालकाय ग्रंथ समूह है और भाषा व अर्थ की दृष्टि से भी वह एक ही ऋषि की रचना नहीं है तथा विभिन्न ऋषियों द्वारा विभिन्न कालों में निर्माण की हुई रचना है। साथ ही ऋग्वेद के दो प्रकार के विभाग उपलब्ध होते हैं — 1. अष्टक, अध्याय और सूक्त तथा 2. मण्डल, अनुवाक और सूक्त। पूरा ऋग्वेद आठ भागों में विभक्त है जिसे अष्टक कहा जाता है और प्रत्येक अष्टक में आठ अध्याय हैं अतः पूरे ऋग्वेद में आठ अष्टक व चौंसठ अध्याय हैं। सम्भवतः यह विभाग पाठक्रम की दृष्टि से किया गया है पर दूसरा विभाग ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण है। इस विभाग में समग्र ऋग्वेद ~~अस विभाग में समग्र~~